प्रोग्रेसिव एज्युकेशन सोसायटी का

मॉडर्न कला,विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय

(स्वायत्त),पुणे-४११००५, महाराष्ट्र

हिंदी विभाग
द्वारा प्रकाशित

" अरुणिमा "

(मासिक पत्रिका)

फरवरी : २०२१

प्रकाशक:

प्रा. शामकांत देशमुख,

डॉ. राजेंद्र झुंजारराव

संपादक: डॉ. प्रेरणा उबाळे

सहायक: अनिसा शेख़

1.कविता- बेटियाँ

-वैष्णवी ताम्हाणे
प्रथम वर्ष कला, हिंदी

पापा की लाडली बेटियाँ
मम्मा की दुलारी बेटियाँ
दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती
है देवी बेटियाँ ।

वो नन्ही-सी गुडिया जन्में जब घर
में समझो समृद्धि की ऋतु आ गई है
।
वो प्यारी-सी सूरत है रब की वो
मूरत
जैसी ज़मीं पे परी आ गई है,
प्रकृति की रूप बेटियाँ,
स्नेह की स्वरूप बेटियाँ ।

बेटी पढ़ाना और आगे बढ़ना
उन्हीं से होता है घर संसार सुंदर
है ताकद इनमें जो अवसर मिले तो
बेटों से भी हो सकती धुरंधर
होती नहीं बोझ बेटियाँ,
है देवी बेटियाँ,
पापा की लाडली बेटियाँ,
मम्मा की दुलारी बेटियाँ ।

2.कवि 'वृंद' के दोहे
संकलन- अभिषेक मादियालकर
तृतीय वर्ष कला- सामान्य हिंदी

1."विद्या धन उद्यम बिना,कहो जो पावे कौन
बिना डुलाये न मिले, ज्यों पंखे की पौन ।"
अर्थ :-
वृंद जी इस दोहे में कहते हैं कि जीवन में कुछ भी पाने के लिए परिश्रम करना पडता है । मेहनत के बिना कोई विद्या नहीं प्राप्त कर सकता है । ठीक वैसे ही जैसे पंखे को हिलाए बिना हवा नहीं मिलती है ।

2."अति हठ मत कर हठ बढे,बात न करिहै कोय ।
ज्यों-ज्यों भीजै कामरी,त्यों-त्यों भारी होय ।।"
अर्थ:-
वृंद जी इस दोहे में कहते हैं कि जादा जिद्द नहीं करनी चाहिए,क्योंकि जादा जिद्द करने से लोग बात करना और रूठने को महत्व नहीं देने लगते है । ठीक उसी तरह जैसे छोटा कम्बल जैसे-जैसे भीगता है वैसे-वैसे भारी होता जाता है ।

3. "कारज धीरे होता है, काहे होता अधीर ।
समय पाय तरुवर करै,केतिक सींचो नीर ।।"
अर्थ:- वृंद जी इस दोहे में कहते हैं कि कोई भी काम धैर्य के साथ होता है । धीरज खोना अच्छा नहीं होता है । ठीक वैसे ही वृक्ष पर समय आने पर ही फल लगते हैं,चाहे उसे समय से पहले कितने ही पानी से सींचा जाएँ ।

3.थोडा हँसे...

संकलन- राकेश केदार

द्वितीय वर्ष,कला-सामान्य हिंदी

1) टीचर: सेमेस्टर सिस्टम से क्या फायदा है,बताओं ?

स्टूडेंट : फायदा तो पता नहीं,पर बेइज्जती साल में दो बार हो जाती हैं ।

2) टीचर : मैं दो वाक्य दूँगा आपको उसमें अंतर बताना हैं -

1) उसने बर्तन धोएँ ।

2) उसे बर्तन धोने पड़े ।

संजू : पहले वाक्य में कर्ता अविवाहित है और दुसरे वाक्य में कर्ता विवाहित है । टीचर बात तो सही हैं ।

3) टीचर: क्लास में लडाई क्यों नहीं करनी चाहिए?

संजू : क्योंकि पता नहीं एग्जाम में कब किसके पीछे बैठना पड़ जाए।